मुळा एज्युकेशन सोसायटीचे

कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविदयालय, सोनई

ता.नेवासा, जि.अहमदनगर

- छात्रों का नाम :– कु. डोळे रेणुका म्हातारदेव.
- वर्ग :– एम.ए.– १
- विषय :– हिंदी
- शोध परियोजना :– माध्यमिक स्तर के विदयार्थीओ को हिन्दी बोलने में आनेवाली समस्या.
- मार्गदर्शक प्राध्यापक का नाम :– डॉ.चौधारे.एस.बी.

प्रा.देशमुख एस.

Scanned by TapScanner

अनुक्रमाणिका

१. प्रस्तावना.

२. शोध परियोजना.

३. विषय का समालोचन.

४. माध्यमिक शिक्षा में हिन्दी विषय की प्रमुख समस्यायें.

५. निष्कर्ष.

Scanned by TapScanner

"प्रस्तावना"

"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों को हिन्दी बोलने में आनेवाली समस्या" इस शोध परियोजना में माध्यमिक स्तर के छात्रों को अनेक प्रकार के समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

अंग्रेजो के भारत के आम नागरिक दैनिक कार्यों में स्थानीय भाषाओं का व्यवहार करते थे उच्च शिक्षा, शास्त्रीय चर्चा जैसे कार्यों के लिए संस्कृत का व्यवहार करते थे मुस्लिम सभ्यता के संपर्क के बाद किसी-किसी कार्यों के लिए फारसी का प्रयोग भी होने लगा था।

वर्तमान समय में अनिवार्य शिक्षा अधिनियम के अनुसार माध्यमिक स्तर तक मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम स्वीकार किया गया है परंतु उच्च शिक्षा स्तर पर आज भी यह समस्या बनी हुई है क्योंकि इस स्तर पर शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी ही हो अनेक महाविद्यालयों में अधिकांश विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान किया जा रहा है ऐसा हिन्दी भाषी क्षेत्रों में ही है केंद्र शासित क्षेत्रों व केंद्रीय विश्व विद्यालयों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी ही है अनेक शिक्षा-संस्थाओं में हिंदी या क्षेत्रीय भाषा तथा अंग्रेजी भाषाओं के माध्यम से शिक्षा प्रदान व प्राप्त की जाती है।

Scanned by TapScanner

Page :
Date : / /

शोध परियोजना :-

ग्वेषण सभी हिन्दी में पर्यायवाची शब्द है। इसी को मराठी में संशोधन और अंग्रेजी में रिसर्च कहते है।

खोज में सर्वथा उतना सृष्टी का नहीं, अज्ञात को ज्ञात करने का ही भाव है। मनुष्य बुद्धीसंपन्न प्राणी होने के कारण अपनी सचेतावस्था से ही जिज्ञासू रहा है।

ज्ञान के क्षेत्रो में शोध का कार्य निरंतर जारी रहता है - शोध ज्ञान की किसी एक सीमा तक पहुँचकर रुक नहीं जाता, वह आगे बढ़ता ही जाता है। विज्ञान ने आज बहुत तरक्की की है। पहले जमाने की शिक्षा और आज के जमाने की शिक्षा इन दोनों में बहुत फरक दिखाई देता है।

शोध का मतलब एक विषय में कहाँ से शुरू हुआ (जन्म), कैसे बड़ा या तरक्की हुई इसके बारे में जानकारी प्राप्त करना उसे ही शोध कहते है।

* समस्या के समाधान हेतु किए गये कार्यों का समालोचनात्मक मूल्यांकन :

परिषदों द्वारा प्रस्तुत किए सुझावों में एक सुर में क्षेत्रीय भाषाओं या मातृभाषा को प्रथम स्थान प्रदान किया गया है साथ ही लगभग सभी ने त्रिभाषा सूत्र के पालन पर जोर दिया है इसके अलावा अँग्रेजी को धीरे धीरे शिक्षा के माध्यम की मुख्य धारा से हटाने का भी सुझाव प्रस्तुत किया गया है सबसे बड़ी विडंबना तो यह है कि एक तरफ लगभग सभी नीति-निर्माता इस बात पर सहमत हैं कि भारत में ब्रिटिश काल के दौरान टुकड़े-टुकड़े में बँटे देश को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करनेवाली एकमात्र भाषा अँग्रेजी ही रही है हिन्दी भाषा की शिक्षा से ही भारतीय जनमानस में राष्ट्रप्रेम की भावना का उदय हुआ साथ ही लगभग सभी का यह मानना है कि वैज्ञानिक और वस्तुनिष्ठ आधुनिक अध्ययन के अध्ययन राष्ट्रीय एकता के लिए खतरनाक सिद्ध हो सकता है, इसके अलावा त्रिभाषा-सूत्र के रूप में निति-निर्माताओं ने लगातार एक अव्यावहारिक और अनावश्यक बोझ विद्यार्थियों के ऊपर लादने का कार्यक्रम तय किया है। निति-निर्माताओं ने इस तथ्य पर गंभीरता से विचार नहीं किया कि हिन्दी को प्राथमिक शिक्षा से दूर रखकर तथा माध्यमिक शिक्षा में एकमात्र एक विषय के रूप में अध्ययन की भाषा बनाकर उच्च शिक्षा में वैज्ञानिकता, तथ्यपरकता और वस्तुनिष्ठ कैसे लाएँगे।

अब तक प्रायः लगभग सभी आयोगों समितियों और परिषदों ने त्रिभाषा-सूत्र का समर्थन किया है। क्षेत्रीय अथवा मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम घोषित किया है, साथ ही निती-निर्माताओं के हिन्दी

Scanned by TapScanner

के संबंध में स्वयं के विचारों में ही विरोधाभास है। ऐसा प्रतीत होता है सुझाव प्रस्तुत करते समय वक्त की माँग को खरीज करके नीति-निर्माताओं ने हिन्दी भाषा के प्रति अपने पूर्वाग्रहों को सुझावों पर हावी होने दिया है।

वर्तमान में हिन्दी माध्यम में नामांकन दर की प्रवृत्ति को देखकर यह पूर्णतया स्पष्ट होता है कि शिक्षा के माध्यम को प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकार करने से ही वर्तमान समय की माँग को पूरा किया जा सकता है सिर्फ यही एक भाषा है जिसके अध्ययन से वैज्ञानिक एवं परानिक को सफल बनाया जा सकता है भारत में राष्ट्रीय एकता की भावना को अटूट मजबूती प्रदान करके साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से अपने संपर्क ज्ञान के आदान-प्रदान सुचारू रूप से किया जा सकता है जहाँ तक राजभाषा हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं के विकास और सम्मान की बात है तो यह कार्य उन्हें अध्ययन के एक विषय के रूप के में स्थापित करके भी सहजता से किया जा सकता

शिक्षा के माध्यम के भाषा की समस्या को हिन्दी को संपूर्ण भारत में शिक्षा के प्रथम माध्यम के रूप में स्वीकार करके ही दूर किया जा सकता है।

Page :
Date : / /

भारत में माध्यमिक शिक्षा की प्रमुख समस्याएँ :

माध्यमिक शिक्षा का जिक्र आते ही बोर्ड परीक्षाओं का जिक्र हो आता है। इसके बाद नकल की कहानियाँ भी याद आ जाती हैं। बोर्ड परीक्षाओं के परीणाम जारी होने के समय छात्र - छात्राओं के तनाव की खबरें भी हम अक्सर पढ़ते - सुनते हैं। माध्यमिक स्तर की शिक्षा कॉलेज की तैयारी का इंट्री प्वाइंट होती है। यहाँ से बच्चे भविष्य में कैरियर के चुनाव को ध्यान में रखते हुए विषयों का चुनाव करते हैं।

(1) <u>छात्र - शिक्षक अनुपात का संतुलित न होना</u> :-

बहुत से स्कूल ऐसे हैं जहाँ छात्रों के अनुपात में शिक्षक नहीं हैं। इस कारण से बच्चों की पढ़ाई प्रभावित होती है। बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नहीं मिल पाती और पढ़ाई के मामले में बाकी क्षेत्रों के बच्चों से पीछे रह जाते हैं।

(2) <u>विषयवार शिक्षकों का अभाव</u> :

भारत में बहुत से सरकारी स्कूल ऐसे हैं जहाँ पर विभिन्न विषयों के शिक्षक नहीं हैं इसके कारण भी बच्चों की पढ़ाई प्रभावित होती है।

Page:
Date: / /

③ पुस्तकालय की दयनीय स्थिती :-

बहुतायत स्कुलो मे माध्यमिक स्तर पर बच्चों मे पढने की आदत का विकास करने पर बहुत ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता। इसका एक उदाहरण लायब्रेरी की उपेक्षा के रुप में नजर आता है। या तो स्कुल में ढंग की किताबें नहीं होती है। अगर किताबें होती भी है वो ताले मे बंद रहती है।

④ परीक्षाओं का दबाव :-

अकाल में बोर्ड परीक्षाओं के डर की कहानी से सब परीचित है। परीक्षाओं के दौरान, किसी भी तरीके से पास होनेवाली तरकीबे नकल को बढावा देती है। बोर्ड परीक्षाओं के दौरान बच्चों के उपर अच्छे प्रदर्शन का काफी दबाव होता है। यह दबाव शिक्षा के प्रति उनकी स्वाभाविक रुची को परिष्कृत करने की बजाय उससे अरुचि पैदा करती है।

⑤ पासबुक पर निर्भरता :-

माध्यमिक स्तर पर आते आते बहुत से छात्रों को पासबुक की आदत लग जाती है। क्योंकी परीक्षाओं मे रटकर सवालों के जवाब देने की क्षमता का ही परीक्षण होता है। ऐसे मे पासबुक के उपर बच्चों की निर्भरता बढ जाती है। इसके कारण उनमें कक्षा के अनुरुप पठन व लेखन कौशल का विकास नहीं हो पाता। वे किसी सवाल के बारे में सोचकर उसके जवाब तलाशने की प्रक्रिया से गुजरे बगैर ~~सही~~ सीधे जवाब तक पहुंचने की आदत के अभ्यस्त हो जाते हैं। पासबुक उपयोग का

Scanned by TapScanner

करोड़ों का कारोबार इसका जीवंत उदाहरण है।

⑥ प्रयोगशाला की खराब स्थिति :-

बहुत से स्कूलों में साइंस की पढ़ाई तो शुरू हो गई है। मगर वहाँ प्रयोगशाला का अभाव है। इसके कारण बच्चों का विज्ञान के व्यावहारिक पहलू की जानकारी नहीं हो पाती है। प्रेक्टिकल के नंबर का दबाव बच्चों के ऊपर होता है। इस कारण से वे कक्षा के दौरान खुलकर सवाल नहीं पूछ पाते। बहुत से स्कूलों में शिक्षकों के दबाव के कारण वे कोचिंग क्लासेज में भी पढ़ने को बाध्य होते हैं।

⑦ कोचिंग सेंटर पर बढ़ती निर्भरता :-

10 वीं व 12 वीं के दौरान ही विद्यार्थियों के विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने की शुरुआत हो जाती है। इसका दबाव अभिभावकों के ऊपर होता है। वे चाहते हैं की बच्चों को परीक्षा में अच्छे नंबर आए ताकि अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल सके।

⑧ अनुपयुक्त पाठ्यक्रम :-

माध्यमिक स्तर का पाठ्यक्रम किताबी ज्ञान को समझ से ज्यादा तवज्जो देता है। इसके कारण बच्चों का पढ़ाई के प्रति सही रुझान नहीं बन पाता है। वे विभिन्न विषयों को बगैर इस समझ के पढ़ रहे होते हैं कि वे इसका इस्तेमाल कहाँ करेंगे।

(9) दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली :-

मूल्यांकन पहले एक ही दो साल की पढ़ाई का बाद में एक ही साल में हो जाता था। मगर 10 वीं व 12 वीं के पाठ्यक्रम को अलग अलग किया गया। ताकि बच्चों पर से पढ़ाई का बोझ कम किया जा सके। सालभर में एक बार होनेवाली परीक्षा से मूल्यांकन की सिलसिला ज्यों का त्यों जारी है। इसमें कोई खास बदलाव नहीं हुआ है।

(10) कॉलेज की तैयारी के लिए कितनी उपयोगी :-

माध्यमिक शिक्षा विश्वविद्यालय में दाखिले का एंट्री प्वाइंट है। यहीं से छात्रों के कॉलेज जाने की शुरुवात होती है। यहाँ वे ज्यादा विस्तृत दुनिया के साथ आपसी संवाद और सीखने - सिखाने का मौका हासिल करते हैं।

माध्यमिक शिक्षा को कॉलेज की तैयारी की दृष्टि से ज्यादा उपयोगी बनाने की जरूरत है ताकि बच्चों में विश्लेषण की क्षमता का विकास हो सके और वे किसी सवाल को अपने परिवेश से जोड़कर उसका जवाब दे सकें।

Scanned by TapScanner

Page :
Date : / /

निष्कर्ष

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को हिन्दी बोलने में आनेवाली के बारे में समस्यों की चर्चा बहुत के सार हुई है।

मातृभाषा की शिक्षा अधिनियम के अनुसार माध्यमिक स्तर तक मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम स्वीकार किया है। उच्च शिक्षा स्तर पर आज भी यह समस्या बन गयी है क्यों इस स्तर पर शिक्षा का माध्यम हिन्दी ही है।

Scanned by TapScanner